# संस्कृत

## राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

--

## षष्ठी कक्षा

रामानुजः

पञ्चमः पाठः

साकल्यं शोध संस्थानम्

२३ अगस्त २०२०

© साकल्यं शोध संस्थानम् कृते

# अनुक्रमणिका


1. पुनरावर्तनम्
2. व्याकरण भाग
3. पुस्तक के भाग
4. भाषते इति भाषा
5. अभ्यास

# अब तक

- हमने देखा कि नामपद और सर्वनाम पद उनके अन्त वर्ण के अनुसार वर्गीकृत किये जाते हैं जैसे **अकारान्त, आकारान्त ।**
- हमने देखा कि प्रथमपुरुष, उत्तमपुरुष और मध्यमपुरुष से सम्बंधित वाक्य कैसे बनाते हैं ।
- हमने देखा कि प्रथमपुरुष के कर्ता तीनों लिङ्गों में होते हैं जैसे **रामः/सः, रमा/सा, पत्रम्/तत् ।**
- हमने देखा कि उत्तमपुरुष और मध्यमपुरुष में लिङ्ग भेद नहीं होता ।
- क्रिया कर्ता के लिङ्ग का अनुसरण नहीं करती इसीलिए **बालकः पठति बालिका च पठति ।**
- साकल्यम् पर अभ्यास ।

# अब तक

- हमने देखा कि नामपद और सर्वनाम पद उनके अन्त वर्ण के अनुसार वर्गीकृत किये जाते हैं जैसे **अकारान्त, आकारान्त ।**
- हमने देखा कि प्रथमपुरुष, उत्तमपुरुष और मध्यमपुरुष से सम्बंधित वाक्य कैसे बनाते हैं ।
- हमने देखा कि प्रथमपुरुष के कर्ता तीनों लिङ्गों में होते हैं जैसे **रामः/सः, रमा/सा, पत्रम्/तत् ।**
- हमने देखा कि उत्तमपुरुष और मध्यमपुरुष में लिङ्ग भेद नहीं होता ।
- क्रिया कर्ता के लिङ्ग का अनुसरण नहीं करती इसीलिए **बालकः पठति बालिका च पठति ।**
- साकल्यम् पर अभ्यास ।

# अब तक

- हमने देखा कि नामपद और सर्वनाम पद उनके अन्त वर्ण के अनुसार वर्गीकृत किये जाते हैं जैसे **अकारान्त, आकारान्त ।**
- हमने देखा कि प्रथमपुरुष, उत्तमपुरुष और मध्यमपुरुष से सम्बंधित वाक्य कैसे बनाते हैं ।
- हमने देखा कि प्रथमपुरुष के कर्ता तीनों लिङ्गों में होते हैं जैसे **रामः/सः, रमा/सा, पत्रम्/तत् ।**
- हमने देखा कि उत्तमपुरुष और मध्यमपुरुष में लिङ्ग भेद नहीं होता ।
- क्रिया कर्ता के लिङ्ग का अनुसरण नहीं करती इसीलिए **बालकः पठति बालिका च पठति ।**
- साकल्यम् पर अभ्यास ।

# अब तक

- हमने देखा कि नामपद और सर्वनाम पद उनके अन्त वर्ण के अनुसार वर्गीकृत किये जाते हैं जैसे **अकारान्त, आकारान्त ।**
- हमने देखा कि प्रथमपुरुष, उत्तमपुरुष और मध्यमपुरुष से सम्बंधित वाक्य कैसे बनाते हैं ।
- हमने देखा कि प्रथमपुरुष के कर्ता तीनों लिङ्गों में होते हैं जैसे **रामः/सः, रमा/सा, पत्रम्/तत् ।**
- हमने देखा कि उत्तमपुरुष और मध्यमपुरुष में लिङ्ग भेद नहीं होता ।
- क्रिया कर्ता के लिङ्ग का अनुसरण नहीं करती इसीलिए **बालकः पठति बालिका च पठति ।**
- साकल्यम् पर अभ्यास ।

# अब तक

- हमने देखा कि नामपद और सर्वनाम पद उनके अन्त वर्ण के अनुसार वर्गीकृत किये जाते हैं जैसे **अकारान्त, आकारान्त ।**
- हमने देखा कि प्रथमपुरुष, उत्तमपुरुष और मध्यमपुरुष से सम्बंधित वाक्य कैसे बनाते हैं ।
- हमने देखा कि प्रथमपुरुष के कर्ता तीनों लिङ्गों में होते हैं जैसे **रामः/सः, रमा/सा, पत्रम्/तत् ।**
- हमने देखा कि उत्तमपुरुष और मध्यमपुरुष में लिङ्ग भेद नहीं होता ।
- क्रिया कर्ता के लिङ्ग का अनुसरण नहीं करती इसीलिए **बालकः पठति बालिका च पठति ।**
- साकल्यम् पर अभ्यास ।

# अब तक

- हमने देखा कि नामपद और सर्वनाम पद उनके अन्त वर्ण के अनुसार वर्गीकृत किये जाते हैं जैसे **अकारान्त, आकारान्त ।**
- हमने देखा कि प्रथमपुरुष, उत्तमपुरुष और मध्यमपुरुष से सम्बंधित वाक्य कैसे बनाते हैं ।
- हमने देखा कि प्रथमपुरुष के कर्ता तीनों लिङ्गों में होते हैं जैसे **रामः/सः, रमा/सा, पत्रम्/तत् ।**
- हमने देखा कि उत्तमपुरुष और मध्यमपुरुष में लिङ्ग भेद नहीं होता ।
- क्रिया कर्ता के लिङ्ग का अनुसरण नहीं करती इसीलिए **बालकः पठति बालिका च पठति ।**
- ▸ साकल्यम् पर अभ्यास ।

# आज की कक्षा

- संस्कृत की वाक्य रचना के सम्बन्ध में पढ़ेंगें और समझेंगें ।
- कविता वृक्षाः को समझेंगें ।

# आज की कक्षा

- संस्कृत की वाक्य रचना के सम्बन्ध में पढ़ेंगें और समझेंगें ।
- कविता वृक्षाः को समझेंगें ।

# अनुक्रमणिका


1. पुनरावर्तनम्
2. व्याकरण भाग
3. पुस्तक के भाग
4. भाषते इति भाषा
5. अभ्यास

# विभक्तिः

आइये हिंदी के कुछ शब्द देखते हैं -

- राम ने रावण को मारा ।
- राम ने बाणों से रावण को मारा ।
- राम ने रावण को मुक्ति दी ।
- राम लंका से अयोध्या आये ।
- राम की पत्नी सीता जी थीं ।
- राम में सारे गुण थे ।
- हे राम हमें सद्बुद्धि दीजिये ।
- क्या यहाँ “ने” और “को” के स्थान बदले जा सकते हैं बिना अर्थ बदले ?
- नाम और क्रिया के बीच में प्रयोग हुए शब्दों के कारण हम वाक्य का क्रम नहीं बदल सकते ।

# विभक्तिः

आइये हिंदी के कुछ शब्द देखते हैं -

- राम ने रावण को मारा ।
- राम ने बाणों से रावण को मारा ।
- राम ने रावण को मुक्ति दी ।
- राम लंका से अयोध्या आये ।
- राम की पत्नी सीता जी थीं ।
- राम में सारे गुण थे ।
- हे राम हमें सद्बुद्धि दीजिये ।
- क्या यहाँ “ने” और “को” के स्थान बदले जा सकते हैं बिना अर्थ बदले ?
- नाम और क्रिया के बीच में प्रयोग हुए शब्दों के कारण हम वाक्य का क्रम नहीं बदल सकते ।

# विभक्तिः

आइये हिंदी के कुछ शब्द देखते हैं -

- राम ने रावण को मारा ।
- राम ने बाणों से रावण को मारा ।
- राम ने रावण को मुक्ति दी ।
- राम लंका से अयोध्या आये ।
- राम की पत्नी सीता जी थीं ।
- राम में सारे गुण थे ।
- हे राम हमें सद्बुद्धि दीजिये ।
- क्या यहाँ “ने” और “को” के स्थान बदले जा सकते हैं बिना अर्थ बदले ?
- नाम और क्रिया के बीच में प्रयोग हुए शब्दों के कारण हम वाक्य का क्रम नहीं बदल सकते ।

# विभक्तिः

आइये हिंदी के कुछ शब्द देखते हैं -

- राम ने रावण को मारा ।
- राम ने बाणों से रावण को मारा ।
- राम ने रावण को मुक्ति दी ।
- राम लंका से अयोध्या आये ।
- राम की पत्नी सीता जी थीं ।
- राम में सारे गुण थे ।
- हे राम हमें सद्बुद्धि दीजिये ।
- क्या यहाँ “ने” और “को” के स्थान बदले जा सकते हैं बिना अर्थ बदले ?
- नाम और क्रिया के बीच में प्रयोग हुए शब्दों के कारण हम वाक्य का क्रम नहीं बदल सकते ।

# विभक्तिः

आइये हिंदी के कुछ शब्द देखते हैं -

- राम ने रावण को मारा ।
- राम ने बाणों से रावण को मारा ।
- राम ने रावण को मुक्ति दी ।
- राम लंका से अयोध्या आये ।
- राम की पत्नी सीता जी थीं ।
- राम में सारे गुण थे ।
- हे राम हमें सद्बुद्धि दीजिये ।
- क्या यहाँ “ने” और “को” के स्थान बदले जा सकते हैं बिना अर्थ बदले ?
- नाम और क्रिया के बीच में प्रयोग हुए शब्दों के कारण हम वाक्य का क्रम नहीं बदल सकते ।

# विभक्तिः

आइये हिंदी के कुछ शब्द देखते हैं -

- राम ने रावण को मारा ।
- राम ने बाणों से रावण को मारा ।
- राम ने रावण को मुक्ति दी ।
- राम लंका से अयोध्या आये ।
- राम की पत्नी सीता जी थीं ।
- राम में सारे गुण थे ।
- हे राम हमें सद्बुद्धि दीजिये ।
- क्या यहाँ “ने” और “को” के स्थान बदले जा सकते हैं बिना अर्थ बदले ?
- नाम और क्रिया के बीच में प्रयोग हुए शब्दों के कारण हम वाक्य का क्रम नहीं बदल सकते ।

# विभक्तिः

आइये हिंदी के कुछ शब्द देखते हैं -

- राम ने रावण को मारा ।
- राम ने बाणों से रावण को मारा ।
- राम ने रावण को मुक्ति दी ।
- राम लंका से अयोध्या आये ।
- राम की पत्नी सीता जी थीं ।
- राम में सारे गुण थे ।
- हे राम हमें सद्बुद्धि दीजिये ।

- क्या यहाँ “ने” और “को” के स्थान बदले जा सकते हैं बिना अर्थ बदले ?
- नाम और क्रिया के बीच में प्रयोग हुए शब्दों के कारण हम वाक्य का क्रम नहीं बदल सकते ।

# विभक्तिः

आइये हिंदी के कुछ शब्द देखते हैं -

- राम ने रावण को मारा ।
- राम ने बाणों से रावण को मारा ।
- राम ने रावण को मुक्ति दी ।
- राम लंका से अयोध्या आये ।
- राम की पत्नी सीता जी थीं ।
- राम में सारे गुण थे ।
- हे राम हमें सद्बुद्धि दीजिये ।

- क्या यहाँ “ने” और “को” के स्थान बदले जा सकते हैं बिना अर्थ बदले ?
- नाम और क्रिया के बीच में प्रयोग हुए शब्दों के कारण हम वाक्य का क्रम नहीं बदल सकते ।

# विभक्तिः

आइये हिंदी के कुछ शब्द देखते हैं -

- राम ने रावण को मारा ।
- राम ने बाणों से रावण को मारा ।
- राम ने रावण को मुक्ति दी ।
- राम लंका से अयोध्या आये ।
- राम की पत्नी सीता जी थीं ।
- राम में सारे गुण थे ।
- हे राम हमें सद्बुद्धि दीजिये ।

- क्या यहाँ “ने” और “को” के स्थान बदले जा सकते हैं बिना अर्थ बदले ?
- नाम और क्रिया के बीच में प्रयोग हुए शब्दों के कारण हम वाक्य का क्रम नहीं बदल सकते ।

# विभक्तिः .....

- संस्कृत भाषा ऐसा मानती है कि नामपदों में केवल आठ प्रकार के शब्दों से पूरी बात कही जा सकती है ।
- ये आठ शब्द मूल (नाम / सर्वनाम) शब्द के थोड़े परिवर्तित रूप होते हैं । ।
- इन्ही आठ तरह के शब्दों को विभक्ति कहते हैं ।
- अब चूँकि मूल शब्द में ही परिवर्तन करके नया शब्द बना लिया गया है इस लिए “ने” “के” “से” जैसे शब्दों की आवश्यकता संस्कृत में नहीं रह जाती ।
- इस कारण से संस्कृत के शब्द वाक्य में कहीं भी रखे जा सकते हैं अर्थात क्रम की बाध्यता नहीं है । **“अहं ब्रह्म अस्मि”, “अस्मि ब्रह्म अहम्” या “अस्मि अहं ब्रह्म”** सभी शुद्ध हैं ।
- मुक्त क्रम होने से कविता करना आसान हो जाता है क्योंकि जो शब्द कविता के छंद में जहाँ सही लगे वहाँ बिना वाक्य का अर्थ बदले रख सकते हैं ।

# विभक्तिः .....

- संस्कृत भाषा ऐसा मानती है कि नामपदों में केवल आठ प्रकार के शब्दों से पूरी बात कही जा सकती है ।
- ये आठ शब्द मूल (नाम / सर्वनाम) शब्द के थोड़े परिवर्तित रूप होते हैं । ।
- इन्ही आठ तरह के शब्दों को विभक्ति कहते हैं ।
- अब चूँकि मूल शब्द में ही परिवर्तन करके नया शब्द बना लिया गया है इस लिए “ने” “के” “से” जैसे शब्दों की आवश्यकता संस्कृत में नहीं रह जाती ।
- इस कारण से संस्कृत के शब्द वाक्य में कहीं भी रखे जा सकते हैं अर्थात क्रम की बाध्यता नहीं है । **“अहं ब्रह्म अस्मि”, “अस्मि ब्रह्म अहम्” या “अस्मि अहं ब्रह्म”** सभी शुद्ध हैं ।
- मुक्त क्रम होने से कविता करना आसान हो जाता है क्योंकि जो शब्द कविता के छंद में जहाँ सही लगे वहाँ बिना वाक्य का अर्थ बदले रख सकते हैं ।

# विभक्तिः .....

- संस्कृत भाषा ऐसा मानती है कि नामपदों में केवल आठ प्रकार के शब्दों से पूरी बात कही जा सकती है ।
- ये आठ शब्द मूल (नाम / सर्वनाम) शब्द के थोड़े परिवर्तित रूप होते हैं । ।
- इन्ही आठ तरह के शब्दों को विभक्ति कहते हैं ।
- अब चूँकि मूल शब्द में ही परिवर्तन करके नया शब्द बना लिया गया है इस लिए “ने” “के” “से” जैसे शब्दों की आवश्यकता संस्कृत में नहीं रह जाती ।
- इस कारण से संस्कृत के शब्द वाक्य में कहीं भी रखे जा सकते हैं अर्थात क्रम की बाध्यता नहीं है । **“अहं ब्रह्म अस्मि”, “अस्मि ब्रह्म अहम्” या “अस्मि अहं ब्रह्म”** सभी शुद्ध हैं ।
- मुक्त क्रम होने से कविता करना आसान हो जाता है क्योंकि जो शब्द कविता के छंद में जहाँ सही लगे वहाँ बिना वाक्य का अर्थ बदले रख सकते हैं ।

# विभक्तिः .....

- संस्कृत भाषा ऐसा मानती है कि नामपदों में केवल आठ प्रकार के शब्दों से पूरी बात कही जा सकती है ।
- ये आठ शब्द मूल (नाम / सर्वनाम) शब्द के थोड़े परिवर्तित रूप होते हैं । ।
- इन्ही आठ तरह के शब्दों को विभक्ति कहते हैं ।
- अब चूँकि मूल शब्द में ही परिवर्तन करके नया शब्द बना लिया गया है इस लिए “ने” “के” “से” जैसे शब्दों की आवश्यकता संस्कृत में नहीं रह जाती ।
- इस कारण से संस्कृत के शब्द वाक्य में कहीं भी रखे जा सकते हैं अर्थात क्रम की बाध्यता नहीं है । **“अहं ब्रह्म अस्मि”, “अस्मि ब्रह्म अहम्” या “अस्मि अहं ब्रह्म”** सभी शुद्ध हैं ।
- मुक्त क्रम होने से कविता करना आसान हो जाता है क्योंकि जो शब्द कविता के छंद में जहाँ सही लगे वहाँ बिना वाक्य का अर्थ बदले रख सकते हैं ।

# विभक्तिः .....

- संस्कृत भाषा ऐसा मानती है कि नामपदों में केवल आठ प्रकार के शब्दों से पूरी बात कही जा सकती है ।
- ये आठ शब्द मूल (नाम / सर्वनाम) शब्द के थोड़े परिवर्तित रूप होते हैं । ।
- इन्ही आठ तरह के शब्दों को विभक्ति कहते हैं ।
- अब चूँकि मूल शब्द में ही परिवर्तन करके नया शब्द बना लिया गया है इस लिए “ने” “के” “से” जैसे शब्दों की आवश्यकता संस्कृत में नहीं रह जाती ।
- इस कारण से संस्कृत के शब्द वाक्य में कहीं भी रखे जा सकते हैं अर्थात क्रम की बाध्यता नहीं है । **“अहं ब्रह्म अस्मि”, “अस्मि ब्रह्म अहम्” या “अस्मि अहं ब्रह्म”** सभी शुद्ध हैं ।
- मुक्त क्रम होने से कविता करना आसान हो जाता है क्योंकि जो शब्द कविता के छंद में जहाँ सही लगे वहाँ बिना वाक्य का अर्थ बदले रख सकते हैं ।

# विभक्तिः .....

- संस्कृत भाषा ऐसा मानती है कि नामपदों में केवल आठ प्रकार के शब्दों से पूरी बात कही जा सकती है ।
- ये आठ शब्द मूल (नाम / सर्वनाम) शब्द के थोड़े परिवर्तित रूप होते हैं । ।
- इन्ही आठ तरह के शब्दों को विभक्ति कहते हैं ।
- अब चूँकि मूल शब्द में ही परिवर्तन करके नया शब्द बना लिया गया है इस लिए “ने” “के” “से” जैसे शब्दों की आवश्यकता संस्कृत में नहीं रह जाती ।
- इस कारण से संस्कृत के शब्द वाक्य में कहीं भी रखे जा सकते हैं अर्थात क्रम की बाध्यता नहीं है । **“अहं ब्रह्म अस्मि”, “अस्मि ब्रह्म अहम्” या “अस्मि अहं ब्रह्म”** सभी शुद्ध हैं ।
- मुक्त क्रम होने से कविता करना आसान हो जाता है क्योंकि जो शब्द कविता के छंद में जहाँ सही लगे वहाँ बिना वाक्य का अर्थ बदले रख सकते हैं ।

# विभक्तिः .....

पुंलिङ्ग सर्वनाम

| क्रम | विभक्ति | हिन्दी | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|---|---|---|---|---|---|
| प्रथमा | कर्ता | ने | सः (वह) | तौ (वे दो) | ते (वे सब) |
| द्वितीया | कर्म | को | तम् (उसको) | तौ (उन दोनों को) | तान् (उन सब को) |
| तृतीया | करण | से,द्वारा | तेन (उसके द्वारा) | ताभ्याम् (उन दोनों के द्वारा) | तैः (उन सब के द्वारा) |
| चतुर्थी | सम्प्रदान | को,लिए | तस्मै (उसके लिये) | ताभ्याम् (उन दोनों के लिए) | तेभ्यः (उन सबके लिए) |
| पञ्चमी | अपादान | से | तस्मात् (उससे) | ताभ्याम् (उन दोनों से) | तेभ्यः (उन सबसे) |
| षष्ठी | सम्बन्ध | का, की | तस्य (उसका) | तयोः (इन दोनों का) | तेषाम् (उन सब का) |
| सप्तमी | अधिकरण | में, पर | तस्मिन् (उसमें) | तयोः (उन दोनों में) | तेषु (उन सबमें) |

# विभक्तिः .....

अस्मद् त्रिलिङ्गकः

| क्रम | विभक्ति | हिन्दी | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|---|---|---|---|---|---|
| प्रथमा | कर्ता | ने | अहम् (मैं / मैंने) | आवाम् (हम दोनों (ने)) | वयम् (हम सब (ने)) |
| द्वितीया | कर्म | को | माम् (मुझको) | आवाम् (हम दोनों को) | अस्मान् (हम सबको) |
| तृतीया | करण | द्वारा | मया (मेरे द्वारा) | आवाभ्याम् (हमदोनों के द्वारा) | अस्माभिः (हम सबके द्वारा) |
| चतुर्थी | सम्प्रदान | लिए | मह्यम् (मेरे लिए) | आवाभ्याम् (हमदोनों के लिए) | अस्मभ्यम् (हम सबके लिए) |
| पञ्चमी | अपादान | से | मत् (मुझसे) | आवाभ्याम् (हम दोनों से) | अस्मत् (हम सबसे) |
| षष्ठी | सम्बन्ध | का | मम (मेरा) | आवयोः (हम दोनों का) | अस्माकम् (हम सबका) |
| सप्तमी | अधिकरण | में | मयि (मुझमें) | आवयोः (हम दोनों में) | अस्मासु (हम सबमें) |

# विभक्तिः .....

अकारान्त पुंलिङ्ग राम शब्दः

| क्रम | विभक्ति | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|---|---|---|---|---|
| प्रथमा | कर्ता | रामः (राम ने) | रामौ (दो रामों ने) | रामाः (कई रामों ने) |
| सम्बोधन | सम्बोधन | हे राम (हे राम) | हे रामौ (हे दोनों राम) | हे रामाः (हे कई राम) |
| द्वितीया | कर्म | रामम् (राम को) | रामौ (दो रामों को) | रामान् (कई रामों को) |
| तृतीया | करण | रामेण (राम से द्वारा) | रामाभ्याम् (दो रामों के द्वारा) | रामैः (कई रामों द्वारा) |
| चतुर्थी | सम्प्रदान | रामाय (राम के लिए) | रामाभ्याम् (दो रामों के लिए) | रामेभ्यः (कई रामों के लिए) |
| पञ्चमी | अपादान | रामात् (राम से) | रामाभ्याम् (दो रामों से) | रामेभ्यः (कई रामों से) |
| षष्ठी | सम्बन्ध | रामस्य (राम का) | रामयोः (दो रामों का) | रामाणाम् (कई रामों का) |
| सप्तमी | अधिकरण | रामे (राम में) | रामयोः (दो रामों में) | रामेषु (कई रामों में) |

# विभक्तिः .....

## सभी विभक्तियों का एक साथ प्रयोग

रामः राजमणिः सदा विजयते रामं रमेशं भजे,
रामेण अभिहिता निशाचरचमू रामाय तस्मै नमः ।
रामात् नास्ति परायणं परतरं रामस्य दासः अस्मि अहम्,
रामे चित्त लयः भवतु मे भो राम माम् उद्धर ॥

# अनुक्रमणिका


1. पुनरावर्तनम्
2. व्याकरण भाग
3. पुस्तक के भाग
4. भाषते इति भाषा
5. अभ्यास

# पुस्तक के भाग

■ नाम पद ■ सर्वनाम पद ■ क्रिया पद

सभी वनों में रहते हुए पेड़ (कई) ।
वने वने निवसन्तो वृक्षाः ।

सभी वनों को बनाते हैं पेड़ (कई)
वनं वनं रचयन्ति वृक्षाः ॥

शाखा रूपी झूले पर बैठे हुए पक्षीगण
शाखाडोलासीना विहगाः ।

उनके साथ कुछ भी कूकते हैं पेड़ (कई)
तैः किमपि कूजन्ति वृक्षाः ॥

पीते हैं हवा को पानी को लगातार
पिबन्ति पवनं जलं सन्ततम् ।

भले लोगों की तरह सभी पेड़ (कई)
साधुजना इव सर्वे वृक्षाः ॥

छूते हैं पैरों से पाताल को और ।
स्पृशन्ति पादैः पातालं च ।

आसमान को सिर पर ढोते हैं पेड़ (कई) ॥
नभः शिरस्सु वहन्ति वृक्षाः ॥

पानी के शीशे में अपनी छाया को
पयोदर्पणे स्वप्रतिबिम्बम् ।

आश्चर्य से देखते हैं पेड़ (कई) ॥
कौतुकेन पश्यन्ति वृक्षाः ॥

फैला कर अपनी छाया की चादर को ।
प्रसार्य स्वच्छायासंस्तरणम् ।

करते हैं सत्कार को पेड़ (कई) ॥
कुर्वन्ति सत्कारं वृक्षाः ॥

# पुस्तक के भाग

■ नाम पद ■ सर्वनाम पद ■ क्रिया पद

सभी वनों में रहते हुए पेड़ (कई)।
वने वने निवसन्तो वृक्षाः ।

सभी वनों को बनाते हैं पेड़ (कई)
वनं वनं रचयन्ति वृक्षाः ॥

शाखा रूपी झूले पर बैठे हुए पक्षीगण
शाखाडोलासीना विहगाः ।

उनके साथ कुछ भी कूकते हैं पेड़ (कई)
तैः किमपि कूजन्ति वृक्षाः ॥

पीते हैं हवा को पानी को लगातार
पिबन्ति पवनं जलं सन्ततम् ।

भले लोगों की तरह सभी पेड़ (कई)
साधुजना इव सर्वे वृक्षाः ॥

छूते हैं पैरों से पाताल को और।
स्पृशन्ति पादैः पातालं च ।

आसमान को सिर पर ढोते हैं पेड़ (कई) ॥
नभः शिरस्सु वहन्ति वृक्षाः ॥

पानी के शीशे में अपनी छाया को
पयोदर्पणे स्वप्रतिबिम्बम् ।

आश्चर्य से देखते हैं पेड़ (कई) ॥
कौतुकेन पश्यन्ति वृक्षाः ॥

फैला कर अपनी छाया की चादर को।
प्रसार्य स्वच्छायासंस्तरणम् ।

करते हैं सत्कार को पेड़ (कई) ॥
कुर्वन्ति सत्कारं वृक्षाः ॥

# पुस्तक के भाग

■ नाम पद ■ सर्वनाम पद ■ क्रिया पद

सभी वनों में रहते हुए पेड़ (कई) ।
वने वने निवसन्तो वृक्षाः ।

सभी वनों को बनाते हैं पेड़ (कई)
वनं वनं रचयन्ति वृक्षाः ॥

शाखा रूपी झूले पर बैठे हुए पक्षीगण
शाखाडोलासीना विहगाः ।

उनके साथ कुछ भी कूकते हैं पेड़ (कई)
तैः किमपि कूजन्ति वृक्षाः ॥

पीते हैं हवा को पानी को लगातार
पिबन्ति पवनं जलं सन्ततम् ।

भले लोगों की तरह सभी पेड़ (कई)
साधुजना इव सर्वे वृक्षाः ॥

छूते हैं पैरों से पाताल को और ।
स्पृशन्ति पादैः पातालं च ।

आसमान को सिर पर ढोते हैं पेड़ (कई) ॥
नभः शिरस्सु वहन्ति वृक्षाः ॥

पानी के शीशे में अपनी छाया को
पयोदर्पणे स्वप्रतिबिम्बम् ।

आश्चर्य से देखते हैं पेड़ (कई) ॥
कौतुकेन पश्यन्ति वृक्षाः ॥

फैला कर अपनी छाया की चादर को ।
प्रसार्य स्वच्छायासंस्तरणम् ।

करते हैं सत्कार को पेड़ (कई) ॥
कुर्वन्ति सत्कारं वृक्षाः ॥

# पुस्तक के भाग

■ नाम पद ■ सर्वनाम पद ■ क्रिया पद

सभी वनों में रहते हुए पेड़ (कई) ।
वने वने निवसन्तो वृक्षाः ।

सभी वनों को बनाते हैं पेड़ (कई)
वनं वनं रचयन्ति वृक्षाः ॥

शाखा रूपी झूले पर बैठे हुए पक्षीगण
शाखाडोलासीना विहगाः ।

उनके साथ कुछ भी कूकते हैं पेड़ (कई)
तैः किमपि कूजन्ति वृक्षाः ॥

पीते हैं हवा को पानी को लगातार
पिबन्ति पवनं जलं सन्ततम् ।

भले लोगों की तरह सभी पेड़ (कई)
साधुजना इव सर्वे वृक्षाः ॥

छूते हैं पैरों से पाताल को और ।
स्पृशन्ति पादैः पातालं च ।

आसमान को सिर पर ढोते हैं पेड़ (कई) ॥
नभः शिरस्सु वहन्ति वृक्षाः ॥

पानी के शीशे में अपनी छाया को
पयोदर्पणे स्वप्रतिबिम्बम् ।

आश्चर्य से देखते हैं पेड़ (कई) ॥
कौतुकेन पश्यन्ति वृक्षाः ॥

फैला कर अपनी छाया की चादर को ।
प्रसार्य स्वच्छायासंस्तरणम् ।

करते हैं सत्कार को पेड़ (कई) ॥
कुर्वन्ति सत्कारं वृक्षाः ॥

# पुस्तक के भाग

■ नाम पद ■ सर्वनाम पद ■ क्रिया पद

सभी वनों में रहते हुए पेड़ (कई) ।
वने वने निवसन्तो वृक्षाः ।

सभी वनों को बनाते हैं पेड़ (कई)
वनं वनं रचयन्ति वृक्षाः ॥

शाखा रूपी झूले पर बैठे हुए पक्षीगण
शाखाडोलासीना विहगाः ।

उनके साथ कुछ भी कूकते हैं पेड़ (कई)
तैः किमपि कूजन्ति वृक्षाः ॥

पीते हैं हवा को पानी को लगातार
पिबन्ति पवनं जलं सन्ततम् ।

भले लोगों की तरह सभी पेड़ (कई)
साधुजना इव सर्वे वृक्षाः ॥

छूते हैं पैरों से पाताल को और ।
स्पृशन्ति पादैः पातालं च ।

आसमान को सिर पर ढोते हैं पेड़ (कई) ॥
नभः शिरस्सु वहन्ति वृक्षाः ॥

पानी के शीशे में अपनी छाया को
पयोदर्पणे स्वप्रतिबिम्बम् ।

आश्चर्य से देखते हैं पेड़ (कई) ॥
कौतुकेन पश्यन्ति वृक्षाः ॥

फैला कर अपनी छाया की चादर को ।
प्रसार्य स्वच्छायासंस्तरणम् ।

करते हैं सत्कार को पेड़ (कई) ॥
कुर्वन्ति सत्कारं वृक्षाः ॥

# पुस्तक के भाग

■ नाम पद ■ सर्वनाम पद ■ क्रिया पद

सभी वनों में रहते हुए पेड़ (कई) ।
वने वने निवसन्तो वृक्षाः ।

सभी वनों को बनाते हैं पेड़ (कई)
वनं वनं रचयन्ति वृक्षाः ॥

शाखा रूपी झूले पर बैठे हुए पक्षीगण
शाखाडोलासीना विहगाः ।

उनके साथ कुछ भी कूकते हैं पेड़ (कई)
तैः किमपि कूजन्ति वृक्षाः ॥

पीते हैं हवा को पानी को लगातार
पिबन्ति पवनं जलं सन्ततम् ।

भले लोगों की तरह सभी पेड़ (कई)
साधुजना इव सर्वे वृक्षाः ॥

छूते हैं पैरों से पाताल को और ।
स्पृशन्ति पादैः पातालं च ।

आसमान को सिर पर ढोते हैं पेड़ (कई) ॥
नभः शिरस्सु वहन्ति वृक्षाः ॥

पानी के शीशे में अपनी छाया को
पयोदर्पणे स्वप्रतिबिम्बम् ।

आश्चर्य से देखते हैं पेड़ (कई) ॥
कौतुकेन पश्यन्ति वृक्षाः ॥

फैला कर अपनी छाया की चादर को ।
प्रसार्य स्वच्छायासंस्तरणम् ।

करते हैं सत्कार को पेड़ (कई) ॥
कुर्वन्ति सत्कारं वृक्षाः ॥

# पुस्तक के भाग

■ नाम पद ■ सर्वनाम पद ■ क्रिया पद

सभी वनों में रहते हुए पेड़ (कई) ।
वने वने निवसन्तो वृक्षाः ।

सभी वनों को बनाते हैं पेड़ (कई)
वनं वनं रचयन्ति वृक्षाः ॥

शाखा रूपी झूले पर बैठे हुए पक्षीगण
शाखाडोलासीना विहगाः ।

उनके साथ कुछ भी कूकते हैं पेड़ (कई)
तैः किमपि कूजन्ति वृक्षाः ॥

पीते हैं हवा को पानी को लगातार
पिबन्ति पवनं जलं सन्ततम् ।

भले लोगों की तरह सभी पेड़ (कई)
साधुजना इव सर्वे वृक्षाः ॥

छूते हैं पैरों से पाताल को और ।
स्पृशन्ति पादैः पातालं च ।

आसमान को सिर पर ढोते हैं पेड़ (कई) ॥
नभः शिरस्सु वहन्ति वृक्षाः ॥

पानी के शीशे में अपनी छाया को
पयोदर्पणे स्वप्रतिबिम्बम् ।

आश्चर्य से देखते हैं पेड़ (कई) ॥
कौतुकेन पश्यन्ति वृक्षाः ॥

फैला कर अपनी छाया की चादर को ।
प्रसार्य स्वच्छायासंस्तरणम् ।

करते हैं सत्कार को पेड़ (कई) ॥
कुर्वन्ति सत्कारं वृक्षाः ॥

# पुस्तक के भाग

■ नाम पद ■ सर्वनाम पद ■ क्रिया पद

सभी वनों में रहते हुए पेड़ (कई) ।
वने वने निवसन्तो वृक्षाः ।

सभी वनों को बनाते हैं पेड़ (कई)
वनं वनं रचयन्ति वृक्षाः ॥

शाखा रूपी झूले पर बैठे हुए पक्षीगण
शाखाडोलासीना विहगाः ।

उनके साथ कुछ भी कूकते हैं पेड़ (कई)
तैः किमपि कूजन्ति वृक्षाः ॥

पीते हैं हवा को पानी को लगातार
पिबन्ति पवनं जलं सन्ततम् ।

भले लोगों की तरह सभी पेड़ (कई)
साधुजना इव सर्वे वृक्षाः ॥

छूते हैं पैरों से पाताल को और ।
स्पृशन्ति पादैः पातालं च ।

आसमान को सिर पर ढोते हैं पेड़ (कई) ॥
नभः शिरस्सु वहन्ति वृक्षाः ॥

पानी के शीशे में अपनी छाया को
पयोदर्पणे स्वप्रतिबिम्बम् ।

आश्चर्य से देखते हैं पेड़ (कई) ॥
कौतुकेन पश्यन्ति वृक्षाः ॥

फैला कर अपनी छाया की चादर को ।
प्रसार्य स्वच्छायासंस्तरणम् ।

करते हैं सत्कार को पेड़ (कई) ॥
कुर्वन्ति सत्कारं वृक्षाः ॥

# पुस्तक के भाग

■ नाम पद ■ सर्वनाम पद ■ क्रिया पद

सभी वनों में रहते हुए पेड़ (कई) ।
वने वने निवसन्तो वृक्षाः ।

सभी वनों को बनाते हैं पेड़ (कई)
वनं वनं रचयन्ति वृक्षाः ॥

शाखा रूपी झूले पर बैठे हुए पक्षीगण
शाखाडोलासीना विहगाः ।

उनके साथ कुछ भी कूकते हैं पेड़ (कई)
तैः किमपि कूजन्ति वृक्षाः ॥

पीते हैं हवा को पानी को लगातार
पिबन्ति पवनं जलं सन्ततम् ।

भले लोगों की तरह सभी पेड़ (कई)
साधुजना इव सर्वे वृक्षाः ॥

छूते हैं पैरों से पाताल को और ।
स्पृशन्ति पादैः पातालं च ।

आसमान को सिर पर ढ़ोते हैं पेड़ (कई) ॥
नभः शिरस्सु वहन्ति वृक्षाः ॥

पानी के शीशे में अपनी छाया को
पयोदर्पणे स्वप्रतिबिम्बम् ।

आश्चर्य से देखते हैं पेड़ (कई) ॥
कौतुकेन पश्यन्ति वृक्षाः ॥

फैला कर अपनी छाया की चादर को ।
प्रसार्य स्वच्छायासंस्तरणम् ।

करते हैं सत्कार को पेड़ (कई) ॥
कुर्वन्ति सत्कारं वृक्षाः ॥

# पुस्तक के भाग

■ नाम पद ■ सर्वनाम पद ■ क्रिया पद

सभी वनों में रहते हुए पेड़ (कई) ।
वने वने निवसन्तो वृक्षाः ।

सभी वनों को बनाते हैं पेड़ (कई)
वनं वनं रचयन्ति वृक्षाः ॥

शाखा रूपी झूले पर बैठे हुए पक्षीगण
शाखाडोलासीना विहगाः ।

उनके साथ कुछ भी कूकते हैं पेड़ (कई)
तैः किमपि कूजन्ति वृक्षाः ॥

पीते हैं हवा को पानी को लगातार
पिबन्ति पवनं जलं सन्ततम् ।

भले लोगों की तरह सभी पेड़ (कई)
साधुजना इव सर्वे वृक्षाः ॥

छूते हैं पैरों से पाताल को और ।
स्पृशन्ति पादैः पातालं च ।

आसमान को सिर पर ढ़ोते हैं पेड़ (कई) ॥
नभः शिरस्सु वहन्ति वृक्षाः ॥

पानी के शीशे में अपनी छाया को
पयोदर्पणे स्वप्रतिबिम्बम् ।

आश्चर्य से देखते हैं पेड़ (कई) ॥
कौतुकेन पश्यन्ति वृक्षाः ॥

फैला कर अपनी छाया की चादर को ।
प्रसार्य स्वच्छायासंस्तरणम् ।

करते हैं सत्कार को पेड़ (कई) ॥
कुर्वन्ति सत्कारं वृक्षाः ॥

# पुस्तक के भाग

■ नाम पद ■ सर्वनाम पद ■ क्रिया पद

सभी वनों में रहते हुए पेड़ (कई) ।
वने वने निवसन्तो वृक्षाः ।

सभी वनों को बनाते हैं पेड़ (कई)
वनं वनं रचयन्ति वृक्षाः ॥

शाखा रूपी झूले पर बैठे हुए पक्षीगण
शाखाडोलासीना विहगाः ।

उनके साथ कुछ भी कूकते हैं पेड़ (कई)
तैः किमपि कूजन्ति वृक्षाः ॥

पीते हैं हवा को पानी को लगातार
पिबन्ति पवनं जलं सन्ततम् ।

भले लोगों की तरह सभी पेड़ (कई)
साधुजना इव सर्वे वृक्षाः ॥

छूते हैं पैरों से पाताल को और ।
स्पृशन्ति पादैः पातालं च ।

आसमान को सिर पर ढ़ोते हैं पेड़ (कई) ॥
नभः शिरस्सु वहन्ति वृक्षाः ॥

पानी के शीशे में अपनी छाया को
पयोदर्पणे स्वप्रतिबिम्बम् ।

आश्चर्य से देखते हैं पेड़ (कई) ॥
कौतुकेन पश्यन्ति वृक्षाः ॥

फैला कर अपनी छाया की चादर को ।
प्रसार्य स्वच्छायासंस्तरणम् ।

करते हैं सत्कार को पेड़ (कई) ॥
कुर्वन्ति सत्कारं वृक्षाः ॥

# पुस्तक के भाग

■ नाम पद ■ सर्वनाम पद ■ क्रिया पद

सभी वनों में रहते हुए पेड़ (कई) ।
वने वने निवसन्तो वृक्षाः ।

सभी वनों को बनाते हैं पेड़ (कई)
वनं वनं रचयन्ति वृक्षाः ॥

शाखा रूपी झूले पर बैठे हुए पक्षीगण
शाखाडोलासीना विहगाः ।

उनके साथ कुछ भी कूकते हैं पेड़ (कई)
तैः किमपि कूजन्ति वृक्षाः ॥

पीते हैं हवा को पानी को लगातार
पिबन्ति पवनं जलं सन्ततम् ।

भले लोगों की तरह सभी पेड़ (कई)
साधुजना इव सर्वे वृक्षाः ॥

छूते हैं पैरों से पाताल को और ।
स्पृशन्ति पादैः पातालं च ।

आसमान को सिर पर ढ़ोते हैं पेड़ (कई) ॥
नभः शिरस्सु वहन्ति वृक्षाः ॥

पानी के शीशे में अपनी छाया को
पयोदर्पणे स्वप्रतिबिम्बम् ।

आश्चर्य से देखते हैं पेड़ (कई) ॥
कौतुकेन पश्यन्ति वृक्षाः ॥

फैला कर अपनी छाया की चादर को ।
प्रसार्य स्वच्छायासंस्तरणम् ।

करते हैं सत्कार को पेड़ (कई) ॥
कुर्वन्ति सत्कारं वृक्षाः ॥

# पुस्तक के भाग

■ नाम पद ■ सर्वनाम पद ■ क्रिया पद

सभी वनों में रहते हुए पेड़ (कई) ।
वने वने निवसन्तो वृक्षाः ।

सभी वनों को बनाते हैं पेड़ (कई)
वनं वनं रचयन्ति वृक्षाः ॥

शाखा रूपी झूले पर बैठे हुए पक्षीगण
शाखाडोलासीना विहगाः ।

उनके साथ कुछ भी कूकते हैं पेड़ (कई)
तैः किमपि कूजन्ति वृक्षाः ॥

पीते हैं हवा को पानी को लगातार
पिबन्ति पवनं जलं सन्ततम् ।

भले लोगों की तरह सभी पेड़ (कई)
साधुजना इव सर्वे वृक्षाः ॥

छूते हैं पैरों से पाताल को और ।
स्पृशन्ति पादैः पातालं च ।

आसमान को सिर पर ढ़ोते हैं पेड़ (कई) ॥
नभः शिरस्सु वहन्ति वृक्षाः ॥

पानी के शीशे में अपनी छाया को
पयोदर्पणे स्वप्रतिबिम्बम् ।

आश्चर्य से देखते हैं पेड़ (कई) ॥
कौतुकेन पश्यन्ति वृक्षाः ॥

फैला कर अपनी छाया की चादर को ।
प्रसार्य स्वच्छायासंस्तरणम् ।

करते हैं सत्कार को पेड़ (कई) ॥
कुर्वन्ति सत्कारं वृक्षाः ॥

# अनुक्रमणिका


1. पुनरावर्तनम्
2. व्याकरण भाग
3. पुस्तक के भाग
4. भाषते इति भाषा
5. अभ्यास

# भाषते इति भाषा

■ हिन्दी ■ संस्कृत

- किसी भाषा को सीखने एकमात्र विकल्प है उस भाषा में सम्भाषण करना (बोलना) ।
- अपने कक्षा के इस भाग में हम छोटे छोटे संस्कृत शब्द और वाक्य सीखेंगें जिसे आप घर में प्रतिदिन प्रयोग करना शुरू कर सकते हैं ।

| | | | |
|---|---|---|---|
| दीपावली की बधाइयाँ | दीपावलीशुभाशयाः | शुभ यात्रा | शुभाः ते पन्थानः |
| नवरात्रि की बधाइयाँ | नवरात्रिशुभाशयाः | सौ साल जियो | शतं जीव शरदो वर्धमानः |
| मकर संक्रांति की बधाइयाँ | मकरसङ्क्रमणस्य शुभाशयाः | वैवाहिक जीवन सफल हो | वैवाहिकजीवनं शुभमयं भवतु |
| नववर्ष की बधाइयाँ | नववर्षस्य शुभाशयाः | मिलकर ख़ुशी हुई | मेलनेन बहु सन्तोषः |
| सफलता की शुभकामना | सफलतायै अभिनन्दनम् | सब कुशल ? | कुशलं किम् ? |

# भाषते इति भाषा

■ हिन्दी ■ संस्कृत

- किसी भाषा को सीखने एकमात्र विकल्प है उस भाषा में सम्भाषण करना (बोलना) ।
- अपने कक्षा के इस भाग में हम छोटे छोटे संस्कृत शब्द और वाक्य सीखेंगें जिसे आप घर में प्रतिदिन प्रयोग करना शुरू कर सकते हैं ।

| | | | |
|---|---|---|---|
| दीपावली की बधाइयाँ | दीपावलीशुभाशयाः | शुभ यात्रा | शुभाः ते पन्थानः |
| नवरात्रि की बधाइयाँ | नवरात्रिशुभाशयाः | सौ साल जियो | शतं जीव शरदो वर्धमानः |
| मकर संक्रांति की बधाइयाँ | मकरसङ्क्रमणस्य शुभाशयाः | वैवाहिक जीवन सफल हो | वैवाहिकजीवनं शुभमयं भवतु |
| नववर्ष की बधाइयाँ | नववर्षस्य शुभाशयाः | मिलकर ख़ुशी हुई | मेलनेन बहु सन्तोषः |
| सफलता की शुभकामना | सफलतायै अभिनन्दनम् | सब कुशल ? | कुशलं किम् ? |

# भाषते इति भाषा

■ हिन्दी ■ संस्कृत

- किसी भाषा को सीखने एकमात्र विकल्प है उस भाषा में सम्भाषण करना (बोलना) ।
- अपने कक्षा के इस भाग में हम छोटे छोटे संस्कृत शब्द और वाक्य सीखेंगें जिसे आप घर में प्रतिदिन प्रयोग करना शुरू कर सकते हैं ।

| | | | |
|---|---|---|---|
| दीपावली की बधाइयाँ | दीपावलीशुभाशयाः | शुभ यात्रा | शुभाः ते पन्थानः |
| नवरात्रि की बधाइयाँ | नवरात्रिशुभाशयाः | सौ साल जियो | शतं जीव शरदो वर्धमानः |
| मकर संक्रांति की बधाइयाँ | मकरसङ्क्रमणस्य शुभाशयाः | वैवाहिक जीवन सफल हो | वैवाहिकजीवनं शुभमयं भवतु |
| नववर्ष की बधाइयाँ | नववर्षस्य शुभाशयाः | मिलकर ख़ुशी हुई | मेलनेन बहु सन्तोषः |
| सफलता की शुभकामना | सफलतायै अभिनन्दनम् | सब कुशल ? | कुशलं किम् ? |

# भाषते इति भाषा

■ हिन्दी ■ संस्कृत

- किसी भाषा को सीखने एकमात्र विकल्प है उस भाषा में सम्भाषण करना (बोलना) ।
- अपने कक्षा के इस भाग में हम छोटे छोटे संस्कृत शब्द और वाक्य सीखेंगें जिसे आप घर में प्रतिदिन प्रयोग करना शुरू कर सकते हैं ।

| | | | |
|---|---|---|---|
| दीपावली की बधाइयाँ | दीपावलीशुभाशयाः | शुभ यात्रा | शुभाः ते पन्थानः |
| नवरात्रि की बधाइयाँ | नवरात्रिशुभाशयाः | सौ साल जियो | शतं जीव शरदो वर्धमानः |
| मकर संक्रांति की बधाइयाँ | मकरसङ्क्रमणस्य शुभाशयाः | वैवाहिक जीवन सफल हो | वैवाहिकजीवनं शुभमयं भवतु |
| नववर्ष की बधाइयाँ | नववर्षस्य शुभाशयाः | मिलकर ख़ुशी हुई | मेलनेन बहु सन्तोषः |
| सफलता की शुभकामना | सफलतायै अभिनन्दनम् | सब कुशल ? | कुशलं किम् ? |

# भाषते इति भाषा

■ हिन्दी ■ संस्कृत

- किसी भाषा को सीखने एकमात्र विकल्प है उस भाषा में सम्भाषण करना (बोलना) ।
- अपने कक्षा के इस भाग में हम छोटे छोटे संस्कृत शब्द और वाक्य सीखेंगें जिसे आप घर में प्रतिदिन प्रयोग करना शुरू कर सकते हैं ।

| | | | |
|---|---|---|---|
| दीपावली की बधाइयाँ | दीपावलीशुभाशयाः | शुभ यात्रा | शुभाः ते पन्थानः |
| नवरात्रि की बधाइयाँ | नवरात्रिशुभाशयाः | सौ साल जियो | शतं जीव शरदो वर्धमानः |
| मकर संक्रांति की बधाइयाँ | मकरसङ्क्रमणस्य शुभाशयाः | वैवाहिक जीवन सफल हो | वैवाहिकजीवनं शुभमयं भवतु |
| नववर्ष की बधाइयाँ | नववर्षस्य शुभाशयाः | मिलकर ख़ुशी हुई | मेलनेन बहु सन्तोषः |
| सफलता की शुभकामना | सफलतायै अभिनन्दनम् | सब कुशल ? | कुशलं किम् ? |

# अनुक्रमणिका


1. पुनरावर्तनम्
2. व्याकरण भाग
3. पुस्तक के भाग
4. भाषते इति भाषा
5. अभ्यास

# अभ्यास

1. उपयुक्त विभक्तिं योजयतु
   - अहं ..... खादामि (रोटिका) ।
   - त्वं ..... पिबसि (जल) ।
   - छात्रः ..... पश्यति (दूरदर्शन) ।
   - वृक्षाः ..... पिबन्ति (पवन) ।
   - तौ: ..... लिखन्ति (कथा) ।
   - आवां ..... गच्छावः (जन्तुशाला) ।
2. कर्ता कः
   - वृक्षाः नभः शिरस्सु वहन्ति ।
   - विहगाः वृक्षेषु कूजन्ति ।
   - पयोदर्पणे वृक्षाः स्वप्रतिबिम्बं पश्यन्ति ।
   - कृषकः अन्नानि उत्पादयति ।
   - सरोवरे मत्स्याः सन्ति ।
3. एक पदेन उत्तरं लिखतु
   - वृक्षाः कैः पातालं स्पृशन्ति ?
   - वृक्षाः किं रचयन्ति ?
   - विहगाः कुत्र आसीनाः ?
   - कौतुकेन वृक्षाः किं पश्यन्ति ?

# अभ्यास

1. उपयुक्त विभक्तिं योजयतु
   - अहं ..... खादामि (रोटिका) ।
   - त्वं ..... पिबसि (जल) ।
   - छात्रः ..... पश्यति (दूरदर्शन) ।
   - वृक्षाः ..... पिबन्ति (पवन) ।
   - ताः ..... लिखन्ति (कथा) ।
   - आवां ..... गच्छावः (जन्तुशाला) ।
2. कर्ता कः
   - वृक्षाः नभः शिरस्सु वहन्ति ।
   - विहगाः वृक्षेषु कूजन्ति ।
   - पयोदर्पणे वृक्षाः स्वप्रतिबिम्बं पश्यन्ति ।
   - कृषकः अन्नानि उत्पादयति ।
   - सरोवरे मत्स्याः सन्ति ।

1. एक पदेन उत्तरं लिखतु
   - वृक्षाः कैः पातालं स्पृशन्ति ?
   - वृक्षाः किं रचयन्ति ?
   - विहगाः कुत्र आसीनाः ?
   - कौतुकेन वृक्षाः किं पश्यन्ति ?

# अभ्यास

1. उपयुक्त विभक्तिं योजयतु
   - अहं ..... खादामि (रोटिका) ।
   - त्वं ..... पिबसि (जल) ।
   - छात्रः ..... पश्यति (दूरदर्शन) ।
   - वृक्षाः ..... पिबन्ति (पवन) ।
   - ताः ..... लिखन्ति (कथा) ।
   - आवां ..... गच्छावः (जन्तुशाला) ।
2. कर्ता कः
   - वृक्षाः नभः शिरस्सु वहन्ति ।
   - विहगाः वृक्षेषु कूजन्ति ।
   - पयोदर्पणे वृक्षाः स्वप्रतिबिम्बं पश्यन्ति ।
   - कृषकः अन्नानि उत्पादयति ।
   - सरोवरे मत्स्याः सन्ति ।

1. एक पदेन उत्तरं लिखतु
   - वृक्षाः कैः पातालं स्पृशन्ति ?
   - वृक्षाः किं रचयन्ति ?
   - विहगाः कुत्र आसीनाः ?
   - कौतुकेन वृक्षाः किं पश्यन्ति ?

# अभ्यास

1. उपयुक्त विभक्तिं योजयतु
   - अहं ..... खादामि (रोटिका) ।
   - त्वं ..... पिबसि (जल) ।
   - छात्रः ..... पश्यति (दूरदर्शन) ।
   - वृक्षाः ..... पिबन्ति (पवन) ।
   - ताः ..... लिखन्ति (कथा) ।
   - आवां ..... गच्छावः (जन्तुशाला) ।
2. कर्ता कः
   - वृक्षाः नभः शिरस्सु वहन्ति ।
   - विहगाः वृक्षेषु कूजन्ति ।
   - पयोदर्पणे वृक्षाः स्वप्रतिबिम्बं पश्यन्ति ।
   - कृषकः अन्नानि उत्पादयति ।
   - सरोवरे मत्स्याः सन्ति ।

1. एक पदेन उत्तरं लिखतु
   - वृक्षाः कैः पातालं स्पृशन्ति ?
   - वृक्षाः किं रचयन्ति ?
   - विहगाः कुत्र आसीनाः ?
   - कौतुकेन वृक्षाः किं पश्यन्ति ?

# अभ्यास

1. उपयुक्त विभक्तिं योजयतु
   - अहं ..... खादामि (रोटिका) ।
   - त्वं ..... पिबसि (जल) ।
   - छात्रः ..... पश्यति (दूरदर्शन) ।
   - वृक्षाः ..... पिबन्ति (पवन) ।
   - ताः ..... लिखन्ति (कथा) ।
   - आवां ..... गच्छावः (जन्तुशाला) ।
2. कर्ता कः
   - वृक्षाः नभः शिरस्सु वहन्ति ।
   - विहगाः वृक्षेषु कूजन्ति ।
   - पयोदर्पणे वृक्षाः स्वप्रतिबिम्बं पश्यन्ति ।
   - कृषकः अन्नानि उत्पादयति ।
   - सरोवरे मत्स्याः सन्ति ।

1. एक पदेन उत्तरं लिखतु
   - वृक्षाः कैः पातालं स्पृशन्ति ?
   - वृक्षाः किं रचयन्ति ?
   - विहगाः कुत्र आसीनाः ?
   - कौतुकेन वृक्षाः किं पश्यन्ति ?

# अभ्यास

1. उपयुक्त विभक्तिं योजयतु
   - अहं ..... खादामि (रोटिका) ।
   - त्वं ..... पिबसि (जल) ।
   - छात्रः ..... पश्यति (दूरदर्शन) ।
   - वृक्षाः ..... पिबन्ति (पवन) ।
   - ताः ..... लिखन्ति (कथा) ।
   - आवां ..... गच्छावः (जन्तुशाला) ।
2. कर्ता कः
   - वृक्षाः नभः शिरस्सु वहन्ति ।
   - विहगाः वृक्षेषु कूजन्ति ।
   - पयोदर्पणे वृक्षाः स्वप्रतिबिम्बं पश्यन्ति ।
   - कृषकः अन्नानि उत्पादयति ।
   - सरोवरे मत्स्याः सन्ति ।

1. एक पदेन उत्तरं लिखतु
   - वृक्षाः कैः पातालं स्पृशन्ति ?
   - वृक्षाः किं रचयन्ति ?
   - विहगाः कुत्र आसीनाः ?
   - कौतुकेन वृक्षाः किं पश्यन्ति ?

# अभ्यास

1. उपयुक्त विभक्तिं योजयतु
   - अहं ..... खादामि (रोटिका) ।
   - त्वं ..... पिबसि (जल) ।
   - छात्रः ..... पश्यति (दूरदर्शन) ।
   - वृक्षाः ..... पिबन्ति (पवन) ।
   - ताः ..... लिखन्ति (कथा) ।
   - आवां ..... गच्छावः (जन्तुशाला) ।
2. कर्ता कः
   - वृक्षाः नभः शिरस्सु वहन्ति ।
   - विहगाः वृक्षेषु कूजन्ति ।
   - पयोदर्पणे वृक्षाः स्वप्रतिबिम्बं पश्यन्ति ।
   - कृषकः अन्नानि उत्पादयति ।
   - सरोवरे मत्स्याः सन्ति ।

1. एक पदेन उत्तरं लिखतु
   - वृक्षाः कैः पातालं स्पृशन्ति ?
   - वृक्षाः किं रचयन्ति ?
   - विहगाः कुत्र आसीनाः ?
   - कौतुकेन वृक्षाः किं पश्यन्ति ?

# अभ्यास

1. उपयुक्त विभक्तिं योजयतु
   - अहं ..... खादामि (रोटिका) ।
   - त्वं ..... पिबसि (जल) ।
   - छात्रः ..... पश्यति (दूरदर्शन) ।
   - वृक्षाः ..... पिबन्ति (पवन) ।
   - ताः ..... लिखन्ति (कथा) ।
   - आवां ..... गच्छावः (जन्तुशाला) ।
2. कर्ता कः
   - वृक्षाः नभः शिरस्सु वहन्ति ।
   - विहगाः वृक्षेषु कूजन्ति ।
   - पयोदर्पणे वृक्षाः स्वप्रतिबिम्बं पश्यन्ति ।
   - कृषकः अन्नानि उत्पादयति ।
   - सरोवरे मत्स्याः सन्ति ।

1. एक पदेन उत्तरं लिखतु
   - वृक्षाः कैः पातालं स्पृशन्ति ?
   - वृक्षाः किं रचयन्ति ?
   - विहगाः कुत्र आसीनाः ?
   - कौतुकेन वृक्षाः किं पश्यन्ति ?

# अभ्यास

1. उपयुक्त विभक्तिं योजयतु
   - अहं ..... खादामि (रोटिका) ।
   - त्वं ..... पिबसि (जल) ।
   - छात्रः ..... पश्यति (दूरदर्शन) ।
   - वृक्षाः ..... पिबन्ति (पवन) ।
   - ताः ..... लिखन्ति (कथा) ।
   - आवां ..... गच्छावः (जन्तुशाला) ।
2. कर्ता कः
   - वृक्षाः नभः शिरस्सु वहन्ति ।
   - विहगाः वृक्षेषु कूजन्ति ।
   - पयोदर्पणे वृक्षाः स्वप्रतिबिम्बं पश्यन्ति ।
   - कृषकः अन्नानि उत्पादयति ।
   - सरोवरे मत्स्याः सन्ति ।

1. एक पदेन उत्तरं लिखतु
   - वृक्षाः कैः पातालं स्पृशन्ति ?
   - वृक्षाः किं रचयन्ति ?
   - विहगाः कुत्र आसीनाः ?
   - कौतुकेन वृक्षाः किं पश्यन्ति ?

# अभ्यास

1. उपयुक्त विभक्तिं योजयतु
   - अहं ..... खादामि (रोटिका) ।
   - त्वं ..... पिबसि (जल) ।
   - छात्रः ..... पश्यति (दूरदर्शन) ।
   - वृक्षाः ..... पिबन्ति (पवन) ।
   - ताः ..... लिखन्ति (कथा) ।
   - आवां ..... गच्छावः (जन्तुशाला) ।
2. कर्ता कः
   - वृक्षाः नभः शिरस्सु वहन्ति ।
   - विहगाः वृक्षेषु कूजन्ति ।
   - पयोदर्पणे वृक्षाः स्वप्रतिबिम्बं पश्यन्ति ।
   - कृषकः अन्नानि उत्पादयति ।
   - सरोवरे मत्स्याः सन्ति ।

1. एक पदेन उत्तरं लिखतु
   - वृक्षाः कैः पातालं स्पृशन्ति ?
   - वृक्षाः किं रचयन्ति ?
   - विहगाः कुत्र आसीनाः ?
   - कौतुकेन वृक्षाः किं पश्यन्ति ?

# अभ्यास

1. उपयुक्त विभक्तिं योजयतु
   - अहं ..... खादामि (रोटिका) ।
   - त्वं ..... पिबसि (जल) ।
   - छात्रः ..... पश्यति (दूरदर्शन) ।
   - वृक्षाः ..... पिबन्ति (पवन) ।
   - ताः ..... लिखन्ति (कथा) ।
   - आवां ..... गच्छावः (जन्तुशाला) ।
2. कर्ता कः
   - वृक्षाः नभः शिरस्सु वहन्ति ।
   - विहगाः वृक्षेषु कूजन्ति ।
   - पयोदर्पणे वृक्षाः स्वप्रतिबिम्बं पश्यन्ति ।
   - कृषकः अन्नानि उत्पादयति ।
   - सरोवरे मत्स्याः सन्ति ।

1. एक पदेन उत्तरं लिखतु
   - वृक्षाः कैः पातालं स्पृशन्ति ?
   - वृक्षाः किं रचयन्ति ?
   - विहगाः कुत्र आसीनाः ?
   - कौतुकेन वृक्षाः किं पश्यन्ति ?

# अभ्यास

1. उपयुक्त विभक्तिं योजयतु
   - अहं ..... खादामि (रोटिका) ।
   - त्वं ..... पिबसि (जल) ।
   - छात्रः ..... पश्यति (दूरदर्शन) ।
   - वृक्षाः ..... पिबन्ति (पवन) ।
   - ताः ..... लिखन्ति (कथा) ।
   - आवां ..... गच्छावः (जन्तुशाला) ।
2. कर्ता कः
   - वृक्षाः नभः शिरस्सु वहन्ति ।
   - विहगाः वृक्षेषु कूजन्ति ।
   - पयोदर्पणे वृक्षाः स्वप्रतिबिम्बं पश्यन्ति ।
   - कृषकः अन्नानि उत्पादयति ।
   - सरोवरे मत्स्याः सन्ति ।

1. एक पदेन उत्तरं लिखतु
   - वृक्षाः कैः पातालं स्पृशन्ति ?
   - वृक्षाः किं रचयन्ति ?
   - विहगाः कुत्र आसीनाः ?
   - कौतुकेन वृक्षाः किं पश्यन्ति ?

# अभ्यास

1. उपयुक्त विभक्तिं योजयतु
   - अहं ..... खादामि (रोटिका) ।
   - त्वं ..... पिबसि (जल) ।
   - छात्रः ..... पश्यति (दूरदर्शन) ।
   - वृक्षाः ..... पिबन्ति (पवन) ।
   - ताः ..... लिखन्ति (कथा) ।
   - आवां ..... गच्छावः (जन्तुशाला) ।
2. कर्ता कः
   - वृक्षाः नभः शिरस्सु वहन्ति ।
   - विहगाः वृक्षेषु कूजन्ति ।
   - पयोदर्पणे वृक्षाः स्वप्रतिबिम्बं पश्यन्ति ।
   - कृषकः अन्नानि उत्पादयति ।
   - सरोवरे मत्स्याः सन्ति ।

1. एक पदेन उत्तरं लिखतु
   - वृक्षाः कैः पातालं स्पृशन्ति ?
   - वृक्षाः किं रचयन्ति ?
   - विहगाः कुत्र आसीनाः ?
   - कौतुकेन वृक्षाः किं पश्यन्ति ?

# अभ्यास

1. उपयुक्त विभक्तिं योजयतु
   - अहं ..... खादामि (रोटिका) ।
   - त्वं ..... पिबसि (जल) ।
   - छात्रः ..... पश्यति (दूरदर्शन) ।
   - वृक्षाः ..... पिबन्ति (पवन) ।
   - ताः ..... लिखन्ति (कथा) ।
   - आवां ..... गच्छावः (जन्तुशाला) ।
2. कर्ता कः
   - वृक्षाः नभः शिरस्सु वहन्ति ।
   - विहगाः वृक्षेषु कूजन्ति ।
   - पयोदर्पणे वृक्षाः स्वप्रतिबिम्बं पश्यन्ति ।
   - कृषकः अन्नानि उत्पादयति ।
   - सरोवरे मत्स्याः सन्ति ।

1. एक पदेन उत्तरं लिखतु
   - वृक्षाः कैः पातालं स्पृशन्ति ?
   - वृक्षाः किं रचयन्ति ?
   - विहगाः कुत्र आसीनाः ?
   - कौतुकेन वृक्षाः किं पश्यन्ति ?

# अभ्यास

1. उपयुक्त विभक्तिं योजयतु
   - अहं ..... खादामि (रोटिका) ।
   - त्वं ..... पिबसि (जल) ।
   - छात्रः ..... पश्यति (दूरदर्शन) ।
   - वृक्षाः ..... पिबन्ति (पवन) ।
   - ताः ..... लिखन्ति (कथा) ।
   - आवां ..... गच्छावः (जन्तुशाला) ।
2. कर्ता कः
   - वृक्षाः नभः शिरस्सु वहन्ति ।
   - विहगाः वृक्षेषु कूजन्ति ।
   - पयोदर्पणे वृक्षाः स्वप्रतिबिम्बं पश्यन्ति ।
   - कृषकः अन्नानि उत्पादयति ।
   - सरोवरे मत्स्याः सन्ति ।

1. एक पदेन उत्तरं लिखतु
   - वृक्षाः कैः पातालं स्पृशन्ति ?
   - वृक्षाः किं रचयन्ति ?
   - विहगाः कुत्र आसीनाः ?
   - कौतुकेन वृक्षाः किं पश्यन्ति ?

# अभ्यास

1. उपयुक्त विभक्तिं योजयतु
   - अहं ..... खादामि (रोटिका) ।
   - त्वं ..... पिबसि (जल) ।
   - छात्रः ..... पश्यति (दूरदर्शन) ।
   - वृक्षाः ..... पिबन्ति (पवन) ।
   - ताः ..... लिखन्ति (कथा) ।
   - आवां ..... गच्छावः (जन्तुशाला) ।
2. कर्ता कः
   - वृक्षाः नभः शिरस्सु वहन्ति ।
   - विहगाः वृक्षेषु कूजन्ति ।
   - पयोदर्पणे वृक्षाः स्वप्रतिबिम्बं पश्यन्ति ।
   - कृषकः अन्नानि उत्पादयति ।
   - सरोवरे मत्स्याः सन्ति ।

1. एक पदेन उत्तरं लिखतु
   - वृक्षाः कैः पातालं स्पृशन्ति ?
   - वृक्षाः किं रचयन्ति ?
   - विहगाः कुत्र आसीनाः ?
   - कौतुकेन वृक्षाः किं पश्यन्ति ?

# साकल्यम् पर अभ्यास

- पहली कक्षा के video में कैसे quiz करनी है दिखाया गया है ।
- यहाँ quiz की एक link होगी उस पर click करके आप सारे अभ्यास प्रश्न कर सकते हैं ।
- Quiz पूरी करने के बाद आप अपने आप ही पुस्तक की समस्त अभ्यास अपने से कर सकेंगें ।
- किसी तरह की शङ्का की स्थिति में video पर टिप्पणी करें अथवा साकल्यम् पर contact us पर क्लिक करें ।

# साकल्यम् पर अभ्यास

- पहली कक्षा के video में कैसे quiz करनी है दिखाया गया है ।
- यहाँ quiz की एक link होगी उस पर click करके आप सारे अभ्यास प्रश्न कर सकते हैं ।
- Quiz पूरी करने के बाद आप अपने आप ही पुस्तक की समस्त अभ्यास अपने से कर सकेंगें ।
- किसी तरह की शङ्का की स्थिति में video पर टिप्पणी करें अथवा साकल्यम् पर contact us पर क्लिक करें ।

## साकल्यम् पर अभ्यास

- पहली कक्षा के video में कैसे quiz करनी है दिखाया गया है ।
- यहाँ quiz की एक link होगी उस पर click करके आप सारे अभ्यास प्रश्न कर सकते हैं ।
- Quiz पूरी करने के बाद आप अपने आप ही पुस्तक की समस्त अभ्यास अपने से कर सकेंगें ।
- किसी तरह की शङ्का की स्थिति में video पर टिप्पणी करें अथवा साकल्यम् पर contact us पर क्लिक करें ।

# साकल्यम् पर अभ्यास

- पहली कक्षा के video में कैसे quiz करनी है दिखाया गया है ।
- यहाँ quiz की एक link होगी उस पर click करके आप सारे अभ्यास प्रश्न कर सकते हैं ।
- Quiz पूरी करने के बाद आप अपने आप ही पुस्तक की समस्त अभ्यास अपने से कर सकेंगें ।
- किसी तरह की शङ्का की स्थिति में video पर टिप्पणी करें अथवा साकल्यम् पर contact us पर क्लिक करें ।

# अगली कक्षा

- षष्ठः पाठः - समुद्रतटः

धन्यवादः

# अगली कक्षा

- षष्ठः पाठः - समुद्रतटः

धन्यवादः

# अगली कक्षा

- षष्ठः पाठः - समुद्रतटः

धन्यवादः